आई एस एस एन 0971-9873

आई सी एम आर पत्रिका

वर्ष-25, अंक-7 रजत जयन्ती विशेषांक जुलाई 2011

इस अंक में

- आई सी एम आर पत्रिका : प्रगति के 25 वर्ष 51
- विश्व जनसंख्या दिवस 2011 52
- आई सी एम आर और हेमहोल्ट्ज़ एसोसिएशन के बीच समझौता ज्ञापन (एम ओ यू) 53
- क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, बेलगांव का 5वां संस्थापना दिवस समारोह 54
- भारत निर्माण-जन सूचना अभियान में आई सी एम आर की भागीदारी 55
- परिषद के समाचार 55

संपादक मंडल

अध्यक्ष — डॉ विश्व मोहन कटोच
महानिदेशक
भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद
एवं सचिव, भारत सरकार
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग

सदस्य — डॉ के. सत्यनारायण
डॉ बेला शाह

संपादक — डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय
डॉ रजनी कान्त

प्रकाशक — श्री जगदीश नारायण माथुर

महानिदेशक का संदेश

भारत सरकार के राजभाषा अधिनियम के अनुपालन में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) द्वारा जुलाई 1986 में हिन्दी मासिक 'आई सी एम आर पत्रिका' के प्रकाशन की शुरुआत की गई। इसका उद्देश्य आई सी एम आर के वैज्ञानिकों द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के साथ-साथ देश के विभिन्न भागों में स्थित परिषद के संस्थानों द्वारा संपन्न शोध कार्यों से मिले परिणामों को सरल हिन्दी में आम लोगों तक पहुंचाना भी रहा है। शुरुआत में इसे त्रैमासिक के रूप में प्रकाशित किया गया। वर्ष 1989 में इसकी प्रकाशन अवधि द्वैवार्षिक और वर्ष 1990 से मासिक कर दी गई। वर्तमान अंक के साथ 'पत्रिका' ने अपने प्रकाशन के 25 वर्ष पूरे कर लिए हैं। इस दौरान न केवल अंग्रेजी में प्रकाशित शोध लेखों का हिन्दी रूपान्तरण बल्कि परिषद के वैज्ञानिकों द्वारा विविध विषयों पर मूल रूप से हिन्दी में लिखे कई लेख प्रकाशित किए गए। इसके अलावा 'पत्रिका' में परिषद और इसके संस्थानों द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी भी उपलब्ध कराई जाती है। आज आवश्यकता है कि परिषद के अधिक से अधिक वैज्ञानिक 'आई सी एम आर पत्रिका' में चिकित्सा और स्वास्थ्य से संबंधित विविध विषयों पर लेख प्रकाशित करें जिससे जन सामान्य को सामयिक, प्रामाणिक, तथ्यपरक एवं सूचनाप्रद जानकारी प्राप्त हो सके।

'आई सी एम आर पत्रिका' के नियमित प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

(डॉ विश्व मोहन कटोच)
सचिव, भारत सरकार,
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं
महानिदेशक
भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद
नई दिल्ली

प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली-110 029

परिषद के उच्चाधिकारियों की ओर से बधाई संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि परिषद द्वारा प्रकाशित 'आई सी एम आर पत्रिका' अपनी स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण कर रही है । जटिल वैज्ञानिक विषयों एवं परिषद द्वारा जारी अनुसंधान कार्यक्रमों तथा अन्य गतिविधियों को सरल-सहज भाषा में जन-सामान्य तक पहुंचाने में 'आई सी एम आर पत्रिका' की अहम् भूमिका रही है। इसके प्रकाशन, साज-सज्जा एवं कलेवर में अभूतपूर्व प्रगति हुई है तथा इसमें समाविष्ट लेखन सामग्री में भी उल्लेखनीय सुधार हुआ है। इसके रजत जयन्ती वर्ष के अवसर पर 'पत्रिका' के सम्पादक मण्डल एवं इससे जुड़े अन्य सदस्यों को हार्दिक बधाई तथा इसके उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

(संजीव दत्ता)
वित्तीय सलाहकार
आई सी एम आर मुख्यालय
नई दिल्ली

अत्यधिक हर्ष का विषय है कि इस वर्ष आई सी एम आर अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण कर रहा है, साथ ही साथ परिषद द्वारा प्रकाशित 'आई सी एम आर पत्रिका' ने भी अपने प्रकाशन के 25 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। 'पत्रिका' का प्रथम अंक जुलाई 1986 में त्रैमासिक रूप में प्रकाशित किया गया, जिसे वर्ष 1989 में द्वैवार्षिक एवं वर्ष 1990 में मासिक रूप से प्रकाशित किया जाने लगा। 'पत्रिका' का उद्देश्य आई सी एम आर की अपनी प्रयोगशालाओं में जारी अनुसंधान के साथ-साथ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय महत्व के जैवआयुर्विज्ञानी विषयों पर सरल एवं सहज भाषा में लोगों को वैज्ञानिक जानकारी पहुंचाना था जिसमें यह सफल रही है। साथ-साथ परिषद के वैज्ञानिकों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भागीदारी तथा अन्य गतिविधियों का भी निरन्तर प्रकाशन किया जाता रहा है। विगत 25 वर्षों के दौरान 'पत्रिका' के माध्यम से स्वास्थ्य महत्व के विविध विषयों और प्रमुख रोगों पर महत्वपूर्ण सूचना प्रदान की गई है। 'पत्रिका' में प्रकाशित अनेक लेख कई वैज्ञानिक पत्रिकाओं में प्रकाशित किए गए जिससे संबंधित जानकारी का व्यापक प्रसार हुआ है। परिषद के संस्थानों के वैज्ञानिकों से लेखों की अपेक्षा की जाती है जिससे न केवल वैज्ञानिकों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि 'पत्रिका' के माध्यम से जन सामान्य को स्वास्थ्य एवं चिकित्सा अनुसंधान से संबंधित विविध विषयों पर प्रामाणिक जानकारी मिल सकेगी।

(डॉ के.सत्यनारायण)
वैज्ञानिक 'जी' एवं प्रमुख
प्रकाशन एवं सूचना
भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय
नई दिल्ली

बड़े हर्ष का विषय है कि परिषद द्वारा प्रकाशित 'आई सी एम आर पत्रिका' इस वर्ष अपने प्रकाशन के 25 वर्ष पूर्ण कर रही है। पत्रिका का प्रकाशन न केवल जटिल वैज्ञानिक विषयों को आम लोगों में जागरूकता उत्पन्न करने में सार्थक रहा है बल्कि राजभाषा के प्रयोग की प्रगामी वृद्धि में भी इसकी उल्लेखनीय भूमिका रही है। विगत 25 वर्षों की यात्रा के दौरान पत्रिका में कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय महत्व के विषयों जैसे सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य, राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति, उपेक्षित उष्णकटिबन्धीय रोगों, मलेरिया, फाइलेरिया, कालाज़ार, क्षयरोग, एच आई वी/एड्स आदि पर रोचक एवं सूचनाप्रद लेख प्रकाशित किए गए हैं। पत्रिका को वर्ष 2000 में 'उत्कृष्ट पत्रिका' सम्मान से भी सम्मानित किया गया जो इसकी गुणवत्ता एवं लोकप्रियता का परिचायक है। पत्रिका के प्रकाशन से सम्बद्ध सभी अधिकारियों को हार्दिक बधाई तथा इसके स्वर्णिम भविष्य के लिए अनेक शुभकामनाएं।

(अरुण बरोका)
आई ए एस
वरिष्ठ उपमहानिदेशक (प्रशासन)
भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय
नई दिल्ली

अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय से प्रकाशित 'आई सी एम आर पत्रिका' ने अनवरत प्रकाशन के 25 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। इस दौरान आई सी एम आर के संस्थानों के वैज्ञानिकों द्वारा चिकित्सा अनुसंधान से जुड़े विविध विषयों पर अनेक रोचक एवं सूचनाप्रद लेख प्रकाशित किए गए, जिससे जनसाधारण को हिन्दी माध्यम से महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई। 'पत्रिका' के सम्पादन से जुड़े सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं।

'पत्रिका' के भावी अंकों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

-डॉ संजीव डी खोलकुटे, निदेशक
राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान, मुम्बई

'आई सी एम आर पत्रिका' के सफल प्रकाशन के 25 वर्ष पूर्ण होने पर बधाई। हर्ष का विषय है कि इन 25 वर्षों की अवधि के दौरान मुझे भी 5 वर्षों (1988-2003) तक इससे जुड़े रहने का अवसर प्राप्त हुआ जिसके लिए मैं आज भी गौरवान्वित महसूस करती हूं। 'पत्रिका' के सम्पादक मण्डल को बधाई और इसके सफल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

-डॉ अंजू शर्मा, वैज्ञानिक 'एफ'
आई सी एम आर मुख्यालय, नई दिल्ली

संचार माध्यमों में 'पत्रिका' की लोकप्रियता में उत्तरोत्तर विकास हुआ है। इन 25 वर्षों में हिन्दी भाषा के पत्रकारों, स्वछंद लेखकों और पत्रिकाओं के संपादकों ने 'पत्रिका' में न केवल रुचि दिखायी वरन अनेक लेखों में प्रकाशित सामग्री को सामयिक घटनाओं से जोड़ कर अच्छा उपयोग भी किया।

-रणबीर सिंह, जनसंपर्क अधिकारी
आई सी एम आर, नई दिल्ली

आई सी एम आर पत्रिका का रजत जयंती वर्ष

आई सी एम आर पत्रिका : प्रगति के 25 वर्ष

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन तथा कठिन वैज्ञानिक विषयों एवं नवीनतम अनुसंधान परिणामों को जन सामान्य तक सरल एवं सहज हिन्दी भाषा में उपलब्ध कराने के उद्देश्य से भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा जुलाई 1986 में हिन्दी में लोकप्रिय पीरियाडिकल 'आई सी एम आर पत्रिका' का प्रकाशन शुरू किया गया। 'पत्रिका' का उद्देश्य देश के विभिन्न भागों में स्थित परिषद के रोगोन्मुख अनुसंधान केन्द्रों द्वारा सम्पन्न शोध के परिणामों को जनसामान्य तक पहुंचाकर जागरूकता उत्पन्न करना था। साथ-साथ परिषद में सम्पन्न बैठकों, कार्यक्रमों तथा परिषद के वैज्ञानिकों द्वारा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भागीदारी से संबंधित अन्य गतिविधियों से भी अवगत कराना था। इसके साथ-साथ स्वास्थ्य महत्व के राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय दिवसों पर आयोजित कार्यक्रमों पर संक्षिप्त जानकारी के माध्यम से भी जागरूकता उत्पन्न करना था।

'आई सी एम आर पत्रिका' का प्रथम अंक जुलाई,1986 में एक त्रैमासिक के रूप में प्रकाशित किया गया जिसमें परिषद द्वारा अंग्रेजी में प्रकाशित मासिक *आई सी एम आर बुलेटिन* के शोध लेखों के सारांश प्रकाशित किए गए। साथ-साथ परिषद एवं इसके संस्थानों में जारी गतिविधियों की भी जानकारी दी गई। वर्ष 1989 में इसका प्रकाशन द्वैमासिक रूप में किया गया तथा वर्ष 1990 से इसे मासिक रूप में अनवरत प्रकाशित किया जा रहा है। इस दौरान वर्ष 1990 से इसे परिषद द्वारा प्रकाशित *आई सी एम आर बुलेटिन* के पूर्णतः हिन्दी रूपान्तरण के रूप में प्रकाशित किया जाने लगा। परिषद के वैज्ञानिकों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने तथा चिकित्सा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में परिषद द्वारा संपन्न शोध कार्यों से मिले परिणामों को सरल भाषा में जन साधारण तक पहुंचाने के उद्देश्य से 'पत्रिका' में परिषद के वैज्ञानिकों द्वारा मूल रूप से हिन्दी में लिखे आलेखों को प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया। इस कड़ी में वर्ष 2000 के अगस्त और सितम्बर माह में मूल रूप से हिन्दी में लिखे लेख भी प्रकाशित किए गए। तद्पश्चात 'पत्रिका' में 'कालाज़ार-कल और आज' (मार्च 2001), 'चिकनगुन्या ज्वर - एक पुनः उभरती जन स्वास्थ्य समस्या' (जनवरी-मार्च, 2007) तथा 'मलेरिया नियंत्रणः प्रगति एवं चुनौतियां' (अप्रैल, 2010) शीर्षक से हिन्दी में अनेक मौलिक लेख प्रकाशित किए गए।

विगत 25 वर्षों के दौरान 'आई सी एम आर पत्रिका' में जनस्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले अनेक रोगों जैसे मलेरिया, फाइलेरिया रोग, कालाज़ार, डेंगी, अतिसार, मानसिक स्वास्थ्य, प्रजनन स्वास्थ्य, कैंसर, जापानी मस्तिष्कशोथ, आपातकालीन गर्भनिरोध, क्षयरोग, कुष्ठरोग, मुखीय स्वास्थ्य, पोलियो, व्यावसायिक स्वास्थ्य, संचारी रोग, आदिवासी स्वास्थ्य, एच आई वी/एड्स जैसे विभिन्न विषयों पर लेख प्रकाशित किए गए। 'विश्व एड्स दिवस' (1 दिसम्बर) को ध्यान में रखकर दिसम्बर का अंक मुख्यतः एच आई वी/एड्स सम्बद्ध पहलुओं पर केन्द्रित रहा। इसके अलावा 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' (28 फरवरी) तथा हिन्दी दिवस (14 सितम्बर) जैसे अवसरों पर 'पत्रिका' के क्रमशः फरवरी एवं सितम्बर अंकों में परिषद मुख्यालय एवं इसके संस्थानों द्वारा सम्पन्न संबद्ध गतिविधियों पर रिपोर्ट्स प्रकाशित की गईं।

'पत्रिका' में जन स्वास्थ्य महत्व के लेखों के अलावा राष्ट्रीय स्वास्थ्य अनुसंधान नीति (सितम्बर-अक्टूबर, 2004), 'सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य' (नवम्बर-दिसम्बर, 2004), तथा 'ड्राफ्टः स्वास्थ्य अनुसंधान नीति' (अक्टूबर 2010) शीर्षक से भी लेख प्रकाशित किए गए। इसके साथ-साथ ऐतिहासिक महत्व के विषयों जैसे 'भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद - एक परिचय',(जुलाई-1986), 'भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद - प्रगति के 8 दशक' (नवम्बर,1991), 'आई सी एम आर - एक्स्ट्राम्युरल अनुसंधान' (जनवरी, 1992), 'राष्ट्रीय पोषण संस्थान - प्रगति के 75 वर्ष', 'भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के 85 वर्ष सम्पन्नः प्रधानमंत्री द्वारा समापन समारोह का शुभारम्भ' (नवम्बर, 1996), 'भारत की स्वतन्त्रता की स्वर्ण जयन्ती : भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समारोहों का शुभारम्भ' (सितम्बर, 1997) तथा 'केन्द्रीय जालमा कुष्ठरोग संस्थान, आगरा की शोध उपलब्धियां' (जनवरी, 2001) आदि शीर्षकों से भी लेख प्रकाशित किए गए।

आई सी एम आर के शताब्दी समारोहों (1911-2011) के अंतर्गत आई सी एम आर के संस्थानों की अनुसंधान गतिविधियों एवं उपलब्धियों पर आधारित थीम लेख प्रकाशित किए गए। इसी कड़ी में पत्रिका के नवम्बर 2010 अंक में 'राष्ट्रीय हैज़ा तथा आंत्ररोग संस्थान, कोलकाता', फरवरी 2011 में 'मुम्बई स्थित राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान : उत्कृष्टता के पथ पर सतत अग्रसर' एवं मई 2011 में 'क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, बेलगांव - हर्बल चिकित्सा पर शोधरत' शीर्षक से विशेष लेख प्रकाशित किए। इसके अलावा 'पत्रिका' के दिसम्बर 2010 अंक में 'आई सी एम आर - गौरवपूर्ण 100 वर्ष' शीर्षक से भी एक विशेष लेख प्रकाशित किया गया। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद - केन्द्रों द्वारा शताब्दी वर्ष के दौरान आयोजित कार्यक्रमों/गतिविधियों पर संक्षिप्त रिपोर्ट्स भी प्रकाशित की गईं।

वर्ष 2006 के पश्चात से 'पत्रिका' को केवल बुलेटिन में छपे लेख के रूपान्तरण से अलग कर स्वतन्त्र रूप प्रदान कर दिया गया तथा अब इसमें आई सी एम आर के संस्थानों/केन्द्रों से प्राप्त लेख अथवा परिषद द्वारा प्रकाशित मासिक जर्नल *आई जे एम आर* में प्रकाशित शोध पत्रों पर आधारित लेखों के साथ-साथ मूल रूप से हिन्दी में लिखे लेख प्रकाशित किए जा रहे हैं। हालांकि, 'पत्रिका' पूर्व में केवल एक कलर में ही प्रकाशित होती थी, परन्तु अगस्त-अक्टूबर 2009 अंक से इसे पूर्णतया 4 कलर रूप में प्रकाशित किया जाने लगा। इसके आवरण, सज्जा एवं इसमें समाविष्ट वैज्ञानिक जानकारी को चित्रों, फोटोग्राफ्स के साथ और आकर्षक बनाया गया। पूर्णतः कलर में प्रकाशित प्रथम अंक (अगस्त-अक्टूबर 2009) में सचिव, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग तथा महानिदेशक, आई सी एम आर का संदेश भी प्रकाशित किया गया।

पत्रिका सम्मानित

'आई सी एम आर पत्रिका' को वर्ष 2000 में केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद द्वारा 'सहस्त्राब्दी विश्व हिन्दी सम्मेलन' के दौरान उत्कृष्ट वैज्ञानिक लेखन एवं हिन्दी में प्रचार-प्रसार हेतु 'उत्कृष्ट पत्रिका सम्मान' से सम्मानित किया गया। दिनांक 19 सितम्बर, 2000 को नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान तत्कालीन केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ सी. पी. ठाकुर द्वारा यह सम्मान प्रदान किया गया। परिषद के तत्कालीन अपर महानिदेशक डॉ पदम सिंह ने यह सम्मान ग्रहण किया। सम्मान स्वरूप एक स्मृति चिन्ह तथा सर्टीफिकेट प्रदान किया गया।

'पत्रिका' में प्रकाशित लेख अन्य संचार माध्यमों तथा लोकप्रिय विज्ञान पत्रिकाओं जैसे 'विज्ञान', 'आरोग्य संदेश' आदि में भी प्रकाशित किए गए। 'पत्रिका' का वितरण लोकसभा/राज्यसभा के सदस्यों, मेडिकल कॉलेजों, आई सी एम आर की गवर्निंग बॉडी/वैज्ञानिक सलाहकार बोर्ड के सदस्यों, अनुसंधान संस्थान के निदेशकों, राज्य मेडिकल शिक्षण एवं स्वास्थ्य सेवाओं के निदेशकों, पत्रकारों/स्वयं सेवी संगठनों तथा आई सी एम आर के वैज्ञानिकों आदि को किया जाता है।

विगत 25 वर्षों से पत्रिका का अनवरत प्रकाशन हो रहा है।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा प्रकाशित 'आईसीएमआर पत्रिका' को केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद नई दिल्ली द्वारा सहस्त्राब्दी विश्व हिन्दी सम्मेलन में 'उत्कृष्ट पत्रिका' के लिए पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर दिनांक 19.9.2000 को परिषद के अपर महानिदेशक डॉ पदम सिंह माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ सी.पी. ठाकुर से पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

विश्व जनसंख्या दिवस 2011

प्रत्येक वर्ष 11 जुलाई विश्व जनसंख्या दिवस के रूप में मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र के जनसंख्या प्रभाग के अनुसार वर्ष 2011 के उत्तरार्द्ध तक विश्व की कुल जनसंख्या 7 बिलियन तक पहुंच जाने का अनुमान है। संभवतः, वर्ष 2045 तक विश्व की आबादी 9 बिलियन तक पहुंच सकती है। पृथ्वी पर प्रत्येक वर्ष लगभग 80 मिलियन लोग और जुड़ जाते हैं, इसके विपरीत भूजल स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है, मिट्टी का क्षरण हो रहा है। हिमखण्ड पिघलते जा रहे हैं। हर रोज़ लगभग 1 बिलियन लोग भूखे रह जाते हैं। आने वाले दशकों में लगभग दो बिलियन और लोगों विशेषतया आर्थिक दृष्टिकोण से कमज़ोर देशों के लोगों के लिए भोजन की व्यवस्था करनी होगी। इसके विपरीत अरबों की संख्या में लोग निर्धनता की श्रेणी से ऊपर उठकर संपन्नता की श्रेणी में आ जाएंगे और यदि वे समृद्ध देशों का अनुसरण करते हुए वनों की कटाई, कोयले और तेल को जलाने, उर्वरकों और पेस्टीसाइड्स के अंधाधुंध प्रयोग करने जैसी गतिविधियों में लिप्त हो जाएंगे तो पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट करने में उनकी भी भागीदारी हो जाएगी।

विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूनिसेफ आदि जैसी संस्थाओं तथा विकसित देशों के प्रयासों के परिणामस्वरूप अनेक जानलेवा रोगों पर काबू पा लिया गया जिसके चलते लोगों की औसत आयु (लाइफ एक्सपेक्टेंसी) बढ़ गई। उदाहरणस्वरूप जहां भारत में वर्ष 1952 में औसत आयु 38 वर्ष थी वह आज 64 वर्ष हो गई है। विकासशील देशों में संभवतः लाखों लोगों की मृत्यु बालकाल के दौरान हो जाती है, परन्तु उनको बचा लिया गया जो स्वयं माता-पिता बन सके। इन सभी कारणों से पृथ्वी पर जनसंख्या की स्थिति विस्फोटक होती जा रही है।

विश्व में लगभग 3 बिलियन लोगों अथवा विश्व की लगभग आधी आबादी की आयु 25 वर्ष से कम है। बढ़ती आबादी से जुड़े 57 देशों में 40 प्रतिशत से अधिक लोग 15 वर्ष से कम आयु वर्ग के हैं। लगभग 3 बिलियन युवा और बच्चे प्रजननशील आयु वर्ग के अन्तर्गत हैं। अधिकांश देशों में विवाह करने की आयु बढ़ती जा रही है, इसके बावजूद लगभग 82 मिलियन लड़कियों का विवाह 18 वर्ष से पहले कर दिया जाता है। सम्पूर्ण विश्व में 15 से 19 वर्षीय युवतियों की मृत्यु के पीछे मुख्यतया सगर्भता और उससे जुड़ी जटिलताओं का हाथ माना जाता है। विकासशील देशों में प्रजनन संबंधी सेवाओं का सर्वथा अभाव है जिसका असर पूरे विश्व पर पड़ता है।

भारत की वर्तमान आबादी लगभग 1.21 बिलियन है (स्रोतः India's Population 2011) जो विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या वाले देशों की श्रेणी में दूसरे स्थान पर है। लगभग 1.35 बिलियन आबादी के साथ चीन विश्व में प्रथम स्थान पर है। आंकड़ों के अनुसार विश्व की 17.32% आबादी भारत में निवास करती है जिसका तात्पर्य यह है कि इस ग्रह का प्रत्येक छठा व्यक्ति भारत में रहता है। यद्यपि, कई दशकों से चीन विश्व की सर्वाधिक आबादी वाला देश रहा है परन्तु वर्ष 2030 तक भारत संभवतः शीर्ष पर पहुंच जाएगा। भारत की मौजूदा जनसंख्या वृद्धि दर 1.58% है जिसके आधार पर वर्ष 2030 के अंत तक इस देश की आबादी संभवतः 1.53 बिलियन हो जाएगी।

भारत की मौजूदा 50 प्रतिशत से अधिक आबादी की आयु 25 वर्ष से कम है और 65% से अधिक आबादी 35 वर्षीय आयु वर्ग के अन्तर्गत है। लगभग 72.2% आबादी कुल 6,38,000 गांवों में निवास करती है शेष 27.8% आबादी 5480 कस्बों और शहरों में रहती है। प्रति 1000 आबादी में जन्म दर 22.22% प्रतिवर्ष (2009), जबकि प्रतिवर्ष मृत्यु दर 6.4 मृत्यु/1000 आबादी है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण 3 (2008) के अनुसार प्रजनन क्षमता दर 2.72 बच्चों का जन्म है और प्रत्येक

1000 जीवित शिशु जन्म में शिशु मर्त्यता दर 30.15 मृत्यु है। वर्ष 2009 के आकलन के अनुसार विश्व में सर्वाधिक अशिक्षित आबादी भारत में है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार भारत की साक्षरता दर 65.38% है, जिसमें पुरुष साक्षरता दर 75.96% और महिला साक्षरता दर 54.28% है। सर्वाधिक साक्षरता दर (90.86%) के साथ केरल प्रथम स्थान पर है जबकि मीज़ोरम 88.80% और लक्षद्वीप (86.66%) का क्रमशः द्वितीय और तृतीय स्थान है।

प्रत्येक वर्ष, विश्व के किसी अन्य देश की तुलना में भारत की आबादी अधिक बढ़ जाती है और यहां तक कि भारत के कुछ राज्यों की अपनी आबादी विश्व के कई देशों की पूर्ण आबादी के बराबर है। उदाहरण के तौर पर, उत्तर प्रदेश की आबादी ब्राज़ील की आबादी के लगभग बराबर है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार इसकी आबादी 190 मिलियन और वृद्धि दर 16.16% थी। भारत में महाराष्ट्र सर्वाधिक आबादी वाला द्वितीय राज्य है जहां की वृद्धि दर 9.42% और आबादी मेक्सिको की आबादी के बराबर है। बिहार (वृद्धि दर 8.07%) देश का तीसरा सर्वाधिक जनसंख्या वाला प्रदेश है जिसकी आबादी जर्मनी की तुलना में अधिक है। पश्चिम बंगाल (वृद्धि दर 7.79%), आंध्र प्रदेश (7.41%) और तमिल नाडु (6.07%) राज्य क्रमशः चौथे, पांचवे और छठे स्थान पर हैं। भारत में पुरुष और महिलाओं का अनुपात 1000:933 है। केरल में महिलाओं का अनुपात सर्वाधिक (प्रति 1000 पुरुष पर महिलाओं की संख्या 1058) है। महिलाओं के अनुपात में पुडुचेरी, (1001) का द्वितीय स्थान है, जबकि छत्तीसगढ़ (990) और तमिल नाडु (986) क्रमशः तीसरे और चौथे स्थान पर है। हरियाणा में महिला अनुपात न्यूनतम (861) है।

भारत की जनसंख्या में त्वरित वृद्धि के पीछे कई कारण हैं जिनमें गरीबी, निरक्षरता, उच्च प्रजनन क्षमता, मृत्यु दर में त्वरित गिरावट जैसी स्थितियों के साथ-साथ बांग्लादेश और नेपाल से लोगों का प्रवेश करना भी सम्मिलित है। भारत की जनसंख्या में विस्फोटक वृद्धि को देखते हुए देश द्वारा विश्व में सर्वप्रथम वर्ष 1952 में राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम की शुरुआत की गई। इस कार्यक्रम से कुछ आशाजनक परिणाम मिले और देश की प्रजनन क्षमता दर में काफी गिरावट देखी गई। वर्ष 1965-2009 के बीच गर्भनिरोधक विधियों के प्रयोग में तिगुना वृद्धि हो गई जिसके चलते प्रजनन दर में आधे से अधिक गिरावट आ गई। इन प्रयासों से अनुकूल परिणाम तो मिले परन्तु निर्णायक लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकी और वर्ष 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद से भारत की आबादी लगभग तीन गुना बढ़ गई।

भारत में शहरी आबादी में पिछले 2 दशकों के दौरान दो गुना वृद्धि हुई है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय वर्ष 1947 में केवल 14% लोग ही शहरों में रहते थे, अब यह आंकड़े बढ़कर दो गुने हो गए हैं। बेहतर रोज़गार के अवसर, विकासात्मक गतिविधियों एवं सुदृढ़ मूल-भूत ढांचे के मद्देनज़र ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों में पलायन जारी है, जो शहरों की चरमराती जीवनशैली को और असुविधा पहुंचाते हैं तथा रोगवृद्धि के लिए भी जिम्मेदार बन जाते हैं।

जैसा कि ऊपर वर्णन किया गया है कि जनसंख्या में वृद्धि होने के पीछे अनेक कारण हैं जिन्हें दूर करने में भारत सरकार द्वारा स्वास्थ्य, शिक्षा, विकास, प्रगति की दिशा में अनेक योजनाएं जारी की हैं परन्तु बढ़ती जनसंख्या पर नियंत्रण रखने की दिशा में जन जागरूकता कार्यक्रमों का भी बराबर महत्व है।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के पूर्व महानिदेशक डॉ सी.जी. पंडित ने *अमेरिकन जर्नल ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन ऐण्ड हाइजीन* (1970;19 (3):375-82) में "*कम्युनिकेबल डिसीज़ेस इन ट्वेंटिएथ सेंचुरी इंडिया*" शीर्षक से प्रकाशित लेख में वर्णन किया है कि "वर्ष 1911 में *इंडियन रिसर्च फण्ड एसोसिएशन* (अब आई सी एम आर) के वैज्ञानिक सलाहकार बोर्ड की प्रथम बैठक में भारत में गिरती आबादी पर चिन्ता व्यक्त की गई थी। और आज आई सी एम आर जनसंख्या विस्फोट द्वारा उत्पन्न समस्याओं पर काबू पाने के लिए प्रयासरत है।"

प्रस्तुतिः डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय, वैज्ञानिक 'ई', भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय, नई दिल्ली।

आई सी एम आर और हेमहोल्ट्ज़ एसोसिएशन के बीच समझौता ज्ञापन (एम ओ यू)

दिनांक 31 मई, 2011 को नई दिल्ली स्थित हैदराबाद हाउस में आई सी एम आर और हेमहोल्ट्ज़ एसोसिएशन के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। भारत के माननीय प्रधान मंत्री डॉ मनमोहन सिंह की उपस्थिति में भारत की ओर से इस समझौता ज्ञापन पर डॉ विश्व मोहन कटोच, सचिव, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार तथा महानिदेशक, आई सी एम आर (दाएं से प्रथम) तथा जर्मनी की ओर से प्रो.डिर्क हींज़, वैज्ञानिक निदेशक, हेमहोल्ट्ज़ सेंटर फॉर इनफेक्शन रिसर्च (बाएं से प्रथम) द्वारा हस्ताक्षर किए गए।

क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, बेलगांव का 5वां संस्थापना दिवस समारोह

आई सी एम आर शताब्दी समारोह के अंतर्गत दिनांक 20 मई, 2011 को परिषद के बेलगांव स्थित क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र का 5वां संस्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर डॉ विश्व मोहन कटोच, सचिव, भारत सरकार, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक,आई सी एम आर, और श्री अरुण बरोका, परिषद के वरिष्ठ उपमहानिदेशक (प्रशासन) मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। के एल ई विश्वविद्यालय, बेलगांव के माननीय उपकुलपति प्रो सी. के. कोकाटे ने समारोह की अध्यक्षता की। इस समारोह में के एल ई एस अस्पताल, इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़, जिला सिविल हॉस्पिटल और सैनिक अस्पताल, बेलगांव के चिकित्सकों के साथ-साथ आसपास के मेडिकल कॉलेजों से शिक्षाविदों, शिक्षकों, छात्रों और शोधकर्ताओं ने भी भाग लिया। इसके अतिरिक्त बेलगांव क्षेत्र के कुछ प्रमुख गैर सरकारी संगठनों ने भी इस समारोह में भाग लिया।

क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, बेलगांव के संस्थापना दिवस पर संबोधित करते हुए सचिव,स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, आई सी एम आर डॉ विश्व मोहन कटोच

आर एम आर सी संग्रहालय के प्रांगण में स्वामी धनवन्तरि की प्रार्थना के साथ सांध्यकालीन समारोह की शुरुआत हुई । संस्थान के प्रभारी-निदेशक डॉ एस.डी. खोलकुटे ने बुके प्रदान कर अतिथियों का स्वागत किया एवं दर्शकों को उनका परिचय भी दिया। डॉ खोलकुटे ने आर एम आर सी के इतिहास की संक्षिप्त जानकारी देते हुए संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों पर भी प्रकाश डाला।

परिषद के प्रशासनिक प्रमुख श्री बरोका ने अनुसंधान गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए नए विकल्पों एवं नई योजनाओं के बारे में दर्शकों को अवगत कराया जिसे शीघ्र ही शुरू किया जाना है। उन्होंने सूचित किया कि अनुसंधान परियोजनाओं को ऑन लाइन जमा करने एवं प्रस्तावों की समीक्षा करने और उसमें होने वाली देरी से बचने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने यह भी घोषणा की कि परिषद के विभिन्न संस्थानों में विशेषतया चिकित्सा क्षेत्र से संबंधित उच्च शिक्षा को सुगम बनाने के लिए डीम्ड विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त करने की प्रक्रिया की शुरुआत की गई है।

मुख्य अतिथि डॉ विश्व मोहन कटोच ने इस केन्द्र द्वारा '*स्पाइसेज़, हर्ब्स ऐण्ड ट्रीज़ फॉर ट्रीटमेंट ऑफ कॉमन एलमेंट्स*' शीर्षक से प्रकाशित पत्रिका का विमोचन किया। इसी अवसर पर श्री बरोका ने 'सामान्य बीमारियों के इलाज में मसालों,जड़ी - बूटियों और पादपों का उपयोग' शीर्षक से प्रकाशित इसके हिन्दी रूपान्तरण का विमोचन किया। डॉ कटोच ने '*अपॉर्च्युनिटीज़ ऑफ हारनेसिंग न्यु नॉलेज फ्रॉम ट्रेडीशनल विज़डम*' (पारम्परिक विद्वता से नवीन ज्ञान को सुसज्जित

डॉ विश्व मोहन कटोच, सचिव, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, आई सी एम आर एवं परिषद के प्रशासनिक प्रमुख श्री अरुण बरोका द्वारा पुस्तक का विमोचन

करने के अवसर) विषय पर संस्थापना दिवस व्याख्यान दिया। अपने प्रेरक भाषण में उन्होंने आधुनिक विज्ञान के माध्यम से भारतीय चिकित्सा पद्धतियों को मजबूत बनाने पर बल दिया। उन्होंने हर्बल चिकित्सा के क्षेत्र में काम कर रहे लोगों से आग्रह किया कि वे समुदाय की आवश्कता के अनुरूप औषधियां विकसित करें।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में प्रो कोकाटे ने वैश्विक स्वीकृति के लिए हमारी पारम्परिक चिकित्सा प्रणाली के दावों को वैज्ञानिक रूप से वैधीकरण की आवश्यकता पर बल दिया।

केन्द्र के प्रभारी-निदेशक डॉ खोलकुटे ने डॉ कटोच, श्री बरोका एवं प्रो कोकाटे को सम्मान स्वरूप स्मृति चिन्ह भेंट किए।

आर एम आर सी, बेलगांव के वैज्ञानिक 'डी' डॉ सुबर्ण रॉय के धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह का समापन हुआ।

आई सी एम आर शताब्दी वर्ष पर विशेष

भारत निर्माण - जन सूचना अभियान में आई सी एम आर की भागीदारी

भारत निर्माण - जन सूचना अभियान के तत्वावधान में पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार, लखनऊ द्वारा दिनांक 21 - 24 जून, 2011 के दौरान राजकीय इण्टर कॉलेज प्रांगण, ग्वालियर रोड, झांसी में आयोजित कार्यक्रम में आई सी एम आर (भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद) की सक्रिय भागीदारी रही। परिषद की ओर से एक पोस्टर प्रदर्शनी आयोजित की गई जिसके माध्यम से प्रदर्शनी में आए दर्शकों को विभिन्न रोगों विशेषतया संतुलित आहार की कमी से होने वाले रोगों और संतुलित आहार के महत्व के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। इस कार्यक्रम में परिषद मुख्यालय के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ विजय कुमार श्रीवास्तव; वैज्ञानिक 'ई' डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय तथा वैज्ञानिक 'डी' डॉ रजनी कान्त ने जन सामान्य को स्वास्थ्य संबंधी जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर डॉ पाण्डेय ने दिनांक 22.6.2011 को आई सी एम आर की प्रमुख गतिविधियों एवं उपलब्धियों पर एक व्याख्यान दिया। डॉ रजनी कान्त ने दिनांक 23.6.2011 को मच्छरजनित रोगों के विषय में एक रोचक व्याख्यान दिया। बड़ी संख्या में लोग परिषद के स्टाल पर आए और स्वास्थ्य संबंधी जानकारी से लाभान्वित हुए।

प्रदर्शनी में आई सी एम आर द्वारा सूचना का प्रसार

परिषद के समाचार

परिषद के विभिन्न तकनीकी दलों/समितियों की नई दिल्ली में संपन्न बैठकें

नैनोमेडिसिन पर फेलोशिप विशेषज्ञ दल की बैठक	25 मई, 2011
बी सी आई एल, नई दिल्ली को निर्दिष्ट आई सी एम आर की प्रौद्योगिकियों की समीक्षा बैठक	26 मई, 2011
'नवजात शिशुओं में संक्रमणों की निगरानी' नामक एक आई सी एम आर टास्क फोर्स अध्ययन के परियोजना शोधकर्ताओं एवं संचालन समिति की संयुक्त बैठक	26 मई, 2011
'बायोइंजीनियरिंग' पर परियोजना पुनरीक्षण समिति	27 मई, 2011
प्रमुख शहरों के संदर्भ में प्रवासन, निर्धनता एवं स्वास्थ्य सुरक्षा की उपलब्धता पर राष्ट्रीय टास्क फोर्स परियोजना के प्रमुख अध्ययनकर्ताओं की बैठक	30-31 मई, 2011
भारत में गर्भनिरोध के एक नवीन विकल्प के रूप में एक प्रोजेस्टेरॉन योनि रिंग के मूल्यांकन पर परियोजना हेतु अन्वेषकों की दिल्ली क्षेत्रीय बैठक	30 मई, 2011
युवा शिशुओं के लिए घर पर आधारित प्रबंधन परियोजना पर विश्लेषण की बैठक	2 जून, 2011
एन वी बी डी सी पी क्लियरेंस हेतु एस ओ पी की तैयारी पर बैठक	2 जून, 2011
देश में औषध क्षेत्र को सुदृढ़ बनाने हेतु एक दीर्घकालिक योजना एवं नीति निर्माण पर टास्क फोर्स बैठक	6 जून, 2011
पारम्परिक औषधीय पादप चिकित्सा पर फेलोशिप विशेषज्ञ दल की बैठक	6 - 7 जून, 2011
तेजी से बढ़ते छोटे शहरों के संदर्भ में प्रवासन, निर्धनता और स्वास्थ्य सुरक्षा की उपलब्धता पर राष्ट्रीय टास्क फोर्स परियोजना के प्रमुख अध्ययनकर्ताओं की बैठक	6 - 7 जून, 2011

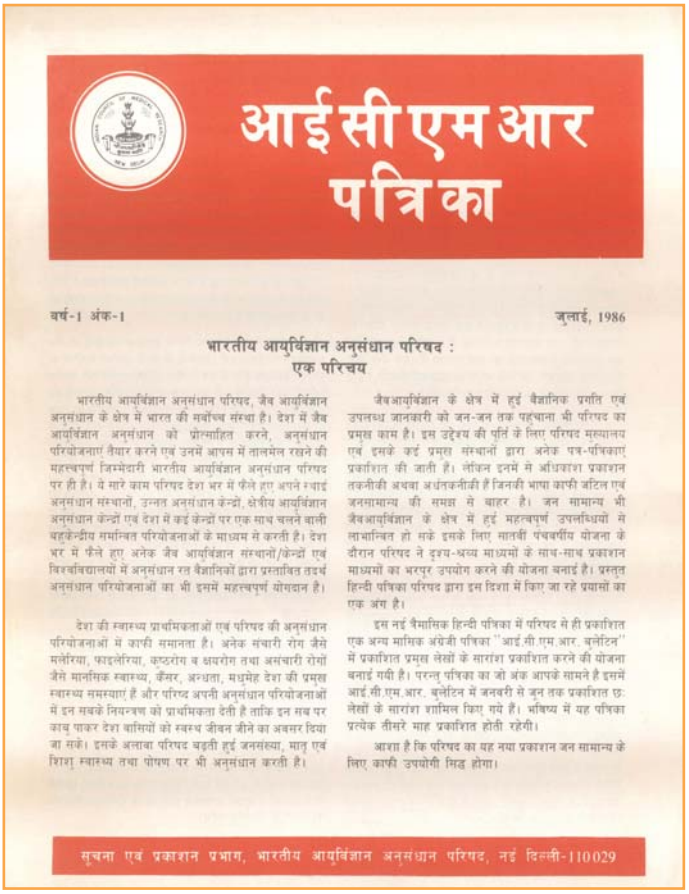

आई सी एम आर पत्रिका

वर्ष-1 अंक-1 जुलाई, 1986

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद :
एक परिचय

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, जैव आयुर्विज्ञान अनुसंधान के क्षेत्र में भारत की सर्वोच्च संस्था है। देश में जैव आयुर्विज्ञान अनुसंधान को प्रोत्साहित करने, अनुसंधान परियोजनाएं तैयार करने एवं उनमें आपस में तालमेल रखने की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद पर ही है। ये सारे काम परिषद देश भर में फैले हुए अपने स्वाई अनुसंधान संस्थानों, उनसे अनुसंधान केन्द्रों, क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्रों एवं देश में कई केन्द्रों पर एक साथ चलने वाली बहुकेन्द्रीय समन्वित परियोजनाओं के माध्यम से करती है। देश भर में फैले हुए अनेक जैव आयुर्विज्ञान संस्थानों/केन्द्रों एवं विश्वविद्यालयों में अनुसंधान रत वैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तावित तदर्थ अनुसंधान परियोजनाओं का भी इसमें महत्त्वपूर्ण योगदान है।

देश की स्वास्थ्य प्राथमिकताओं एवं परिषद की अनुसंधान परियोजनाओं में काफी समानता है। अनेक संचारी रोग जैसे मलेरिया, फाइलेरिया, कुष्ठरोग व क्षयरोग तथा असंचारी रोगों जैसे मानसिक स्वास्थ्य, कैंसर, अन्धता, मधुमेह देश की प्रमुख स्वास्थ्य समस्याएं हैं और परिषद अपनी अनुसंधान परियोजनाओं में इन सबके नियन्त्रण को प्राथमिकता देती है ताकि इन सब पर काबू पाकर देश वासियों को स्वस्थ जीवन जीने का अवसर दिया जा सके। इसके अलावा परिषद बढ़ती हुई जनसंख्या, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य तथा पोषण पर भी अनुसंधान करती है।

जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में हुई वैज्ञानिक प्रगति एवं उपलब्ध जानकारी को जन-जन तक पहुंचाना भी परिषद का प्रमुख काम है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए परिषद मुख्यालय एवं इसके कई प्रमुख संस्थानों द्वारा अनेक पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित की जाती हैं। लेकिन इनमें से अधिकांश प्रकाशन तकनीकी अथवा अंग्रेजी में हैं जिनकी भाषा काफी जटिल एवं जनसामान्य की समझ से बाहर है। जन सामान्य भी जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में हुई महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों से लाभान्वित हो सके इसके लिए सातवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान परिषद ने दृश्य-श्रव्य माध्यमों के साथ-साथ प्रकाशन माध्यमों का भरपूर उपयोग करने की योजना बनाई है। प्रस्तुत हिन्दी पत्रिका परिषद द्वारा इस दिशा में किए जा रहे प्रयासों का एक अंग है।

इस नई त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका में परिषद से ही प्रकाशित एक अन्य मासिक अंग्रेजी पत्रिका "आई.सी.एम.आर. बुलेटिन" में प्रकाशित प्रमुख लेखों के सारांश प्रकाशित करने की योजना बनाई गयी है। परन्तु पत्रिका का जो अंक आपके सामने है इसमें आई.सी.एम.आर. बुलेटिन में जनवरी से जून तक प्रकाशित छः लेखों के सारांश शामिल किए गये हैं। भविष्य में यह पत्रिका प्रत्येक तीसरे माह प्रकाशित होती रहेगी।

आशा है कि परिषद का यह नया प्रकाशन जन सामान्य के लिए काफी उपयोगी सिद्ध होगा।

सूचना एवं प्रकाशन प्रभाग, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली-110029

आई सी एम आर पत्रिका की प्रथम अंक
(जुलाई, 1986)

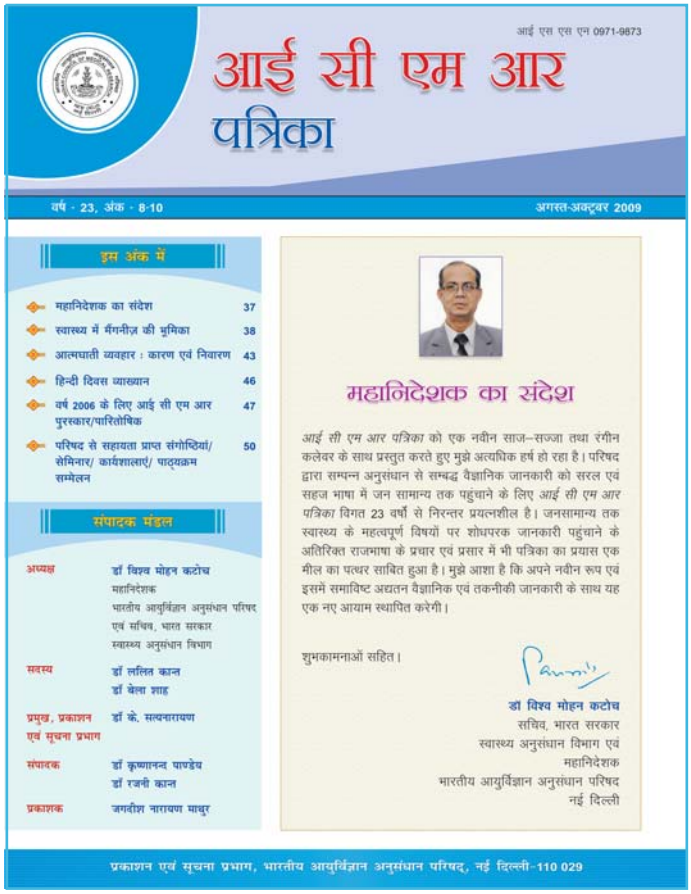

आई एस एस एन 0971-9873

आई सी एम आर पत्रिका

वर्ष - 23, अंक - 8-10 अगस्त-अक्टूबर 2009

इस अंक में

- महानिदेशक का संदेश 37
- स्वास्थ्य में मैंगनीज़ की भूमिका 38
- आत्मघाती व्यवहार : कारण एवं निवारण 43
- हिन्दी दिवस व्याख्यान 46
- वर्ष 2006 के लिए आई सी एम आर पुरस्कार/पारितोषिक 47
- परिषद से सहायता प्राप्त संगोष्ठियां/ सेमिनार/ कार्यशालाएं/ पाठ्यक्रम सम्मेलन 50

संपादक मंडल

अध्यक्ष — डॉ विश्व मोहन कटोच, महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद एवं सचिव, भारत सरकार, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग

सदस्य — डॉ ललित कान्त, डॉ वेला शाह

प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग — डॉ के. सत्यनारायण

संपादक — डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय, डॉ रजनी कान्त

प्रकाशक — जगदीश नारायण माथुर

महानिदेशक का संदेश

आई सी एम आर पत्रिका को एक नवीन साज-सज्जा तथा रंगीन कलेवर के साथ प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यधिक हर्ष हो रहा है। परिषद द्वारा सम्पन्न अनुसंधान से सम्बद्ध वैज्ञानिक जानकारी को सरल एवं सहज भाषा में जन सामान्य तक पहुंचाने के लिए *आई सी एम आर पत्रिका* विगत 23 वर्षों से निरन्तर प्रयत्नशील है। जनसामान्य तक स्वास्थ्य के महत्वपूर्ण विषयों पर शोधपरक जानकारी पहुंचाने के अतिरिक्त राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार में भी पत्रिका का प्रयास एक मील का पत्थर साबित हुआ है। मुझे आशा है कि अपने नवीन रूप एवं इसमें समाविष्ट अद्यतन वैज्ञानिक एवं तकनीकी जानकारी के साथ यह एक नए आयाम स्थापित करेगी।

शुभकामनाओं सहित।

डॉ विश्व मोहन कटोच
सचिव, भारत सरकार
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं
महानिदेशक
भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद
नई दिल्ली

प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली-110 029

नवीन कलेवर में आई सी एम आर पत्रिका
(अगस्त-अक्टूबर, 2009)

आई सी एम आर पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के 25 वर्ष

आई सी एम आर पत्रिका भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in पर भी उपलब्ध है

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्

सेमिनार/संगोष्ठियां/कार्यशालाएं आयोजित करने के लिए परिषद द्वारा आंशिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, वित्तीय सहायता के लिए निर्धारित प्रपत्र पर पूर्णतया भरे हुए केवल उन्हीं आवेदन पत्रों पर विचार किया जाएगा जो सेमिनार/संगोष्ठी/कार्यशाला आदि के आरम्भ होने की तारीख से कम से कम चार महीने पूर्व भेजे जाएंगे।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के लिए मैसर्स रॉयल ऑफसेट प्रिन्टर्स
ए–89/1, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 028 से मुद्रित। पं. सं. 47196/87